

Dr. Sunil Kr. "Sunam" (system psy.)	Study material
Assistant Professor (Guest)	B.A. Part-II (H)
Dept. of Psychology	Paper-IV
D.B. College Jaynagar	Date: - 30-10-20
L.N.M.V. Jabhanga	20-Next class

## Humanistic psychology

### contribution of Rogers

(2) i

आत्म-संप्रत्यय

(Self concept):-

आत्म-संप्रत्यय में अनुभूतियों के वे सारे पहलु सामिलित होते हैं जिस व्यक्ति चेतन के रूप में प्रत्यक्षण करता है। ऐसी अनुभूतियों का प्रत्यक्षण कभी कभी यथार्थ रूप से नहीं भी हो सकता है। एक बार जैसे ही व्यक्ति का आत्म-संप्रत्यय (Self concept) का निर्माण हो जाता है, उसमें कुछ परिवर्तन अगर असंभव नहीं हो तो कठिन (difficult) अवश्य ही हो जाता है। ऐसी अनुभूतियों जो आत्मप्रत्यय के साथ संगत नहीं होती हैं उसके अस्तित्व को व्यक्ति नकार देती हैं या उसमें विकृति (distortion) आ जाती है। आत्म-संप्रत्यय (Self-concept) वास्तविक आत्मन (Real self) या जैविक आत्मन (Organismic self) से भिन्न होता है। आत्म-संप्रत्यय से तात्पर्य मात्र उन अनुभूतियों सामिलित होती हैं जो व्यक्ति के चेतन से परे होती हैं। अंतर्दृष्टिकरण, स्टीनर ग्रन्थि (adrenal gland) जैविक आत्मन (Organismic self) का हिस्सा है परन्तु जब तक इस ग्रन्थि के कार्य में असामान्यता नहीं आती है अर्थात् यह अतिक्रिया (overactivation) या न्यूनक्रिया (underactivation) या न्यूनक्रिया नहीं करता है यानी व्यक्ति को उसके (अंतर्दृष्टिकरण) का अंदाज नहीं

होती है, वह आत्म-संप्रत्यय (self-concept) का  
ब्रह्मा नहीं होता है।

~~ब्रह्मा~~ आदर्शवादी आत्मन (Ideal self):-

आत्मन का दूसरा उपान्त (Sublimation) आदर्शवादी आत्मन (Ideal self) है, जिसमें जैसी अनुभूतियाँ होती हैं जो व्यक्ति की भविष्य की इच्छाओं से संबंधित होती हैं। व्यक्ति भविष्य में क्या करना चाहता है या उसे क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए आदि से संबंधित विचार आदर्शवादी आत्मन (Ideal self) में संरक्षित होते हैं। आदर्शवादी आत्मन (Ideal self) तथा प्रत्यक्ष आत्मन (perceived self) में अधिक भेद या अंतर होने से व्यक्ति मानसिक रूप से असुखी हो जाता है।

next class